ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 1, January 2019

# महिला सशक्तिकरणः राजनीतिक परिदृश्य

डॉ. सम्पत राम रैगर
सह आचार्य, राजनीति विज्ञान,
स्व. राजेश पायलेट राजकीय महाविद्यालय, बादीकुई (दौसा) राज.

महिला सशक्तिकरण अध्ययन की महत्वपूर्ण संकल्पना ही नही समाज की प्रमुख आवश्यकता भी हैं। विकास के सन्दर्भ में महिला वर्ग की अपेक्षित स्थिति ने महिला सशक्तिकरण कीआवश्यकता का प्रतिपादन किया। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार किसी समाज के विकास का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उस समाज में महिलाओं का कितना विकास हुआ हैं। अर्थात किसी भी समाज का विकास महिलाओं के विकास के बिना अपूर्ण है। समाज के विकास के लिए महिलाओं का विकास आवश्यक है। समाज की आधी आबादी के विकास के बिना हम सम्पुर्ण समाज के विकास की कल्पना नही कर सकते है। राजनीतिक सशक्तिकरण 'महिला विकास' का प्रभावी मार्ग है। सार्वजनिक क्षेत्र में आधी आबादी की भूमिका को सुनिश्चित करके ही समाज के सम्पूर्ण विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है। अतः वर्तमान में  विकास के सन्दर्भ में 'महिला सशक्तिकरण' हमारी प्रमुखआवश्यकता बन गई है।

भारत जैसे पृितसत्तात्मक समाज में सम्पूर्ण विकास की कल्पना इतनी सहज नही है क्योंकि पारम्परिक समाज में आधी आबादी द्वारा समाज द्वारा निर्धारित वर्जनाओं को तोडना चुनौतिपूर्ण कृत्य हैं।किसी भी समाज व्यवस्था में सत्ता संरचनाएं महिलाओं के लिए शोषणकारी स्थितियां पैदा करती है। नारी उत्पीड़न, शोषण की स्थिति से उबरने के लिए महिला सशक्तिकरण के रास्ते की खोज की गयी ताकि उनका विकास हो सके। महिलाओं के अधिकारों के लिए नारीवाद आन्दोलन सामने आया और राजनीतिक निर्णय में महिलाओं की भागीदारी के लिए आवाज उठाई।[1]

## महिला सशक्तिकरण

नीति एवं निर्णय–निर्माण के प्रत्येक स्तर पर महिलाओं की समान सहभागिता ही उनका राजनीतिक सशक्तिकरण है। नारीवादी व्याख्या के अनुसार महिला सशक्तिकरण एक ऐसी वैकल्पिक समतामूलक संरचना का पक्षधर है, जिसमें स्त्री सशक्त अभिकर्ता के रूप में समाज में शक्ति संरचनाओं के सभी स्तरों पर निर्णय प्रक्रिया में समान सहभागी के रूप में हो।[2] नारीवादी चिन्तकों ने राजनीति, प्रशासन

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

*(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)*

*Visit: www.ijirset.com*

**Vol. 8, Issue 1, January 2019**

और अन्य सत्ता संरचना में महिला प्रतिनिधित्व को आवश्यक माना। ऐनी फिलिप्स ने अपनी पुस्तक पॉलिटिक्स ऑफ प्रेजंस में महिलाओं के लिए आरक्षण की वकालात की और कहा कि महिलाओं के लिए निकायों में प्रतिनिधित्व की गारन्टी दी जानी चाहिए। लोकतान्त्रिक प्रणाली में सामाजिक समुदायों का प्रतिनिधित्व लोकतन्त्र के हित में होता है। नारीवादी नेतृत्व ने भी महिलाओं के आरक्षण की बात को बेहतर रास्ता माना है।[3]महिला वर्ग की अपेक्षित स्थिति के सन्दर्भ में उनका राजनीतिक सशक्तिकरण वेश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण एवं सशक्त उपाय के रूप में स्वीकार किया गया है। अतः भारत में भी महिला सशक्तिकरण की दिशा में व्यापक प्रयास किये जाते रहे है।[4] अतः महिला सशक्तिकरण के अनेकों प्रयासों के बावजूद भी भारतीय समाज अपेक्षित परिणाम प्राप्त नही हुए है।

महिला सशक्तिकरण प्रदेश या राष्ट्रीय ही नही वरन् एक महत्वपूर्ण वेश्विक आवश्यकता है। महिलाओं पर चौथा विश्व सम्मेलन–1995 में 4 से 15 सितंबर 1995 तक बीजिंग में बैठक के बाद बीजिंग 'डिकलरेशन एण्ड प्लेटफॉम फॉर एक्शन' के अनुसार महिला सशक्तिकरण और समाज के सभी क्षेत्रों में समानता के आधार पर उनकी पूर्ण भागीदारी, निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी और सत्ता तक पहुंच सहित, समानता, विकास और शांति की उपलब्धि के लिए राज्यों की प्रतिबद्धता का आवह्ान किया गया। बीजिंग डिक्लेरेशन एंड प्लेटफॉर्म फॉर एक्शन महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक दूरदर्शी एजेंडा है। यह दुनिया भर में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करने और महिला सशक्तिकरण के समर्थन में राज्यों के प्रयासों का आकलन करने के लिए संदर्भ एक संरचनसत्मक व्यवस्था है।[5]

## महिला सशक्तिकरण : राजनीतिक परिदृश्य

राजनीति में महिला सहभागिता की उपेक्षित स्थिति कोई स्थानीय समस्या नही है अपितु एक वेश्विक समस्या है। अतः राजनीति में महिला सहभागिता को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न प्रयास किये जाते रहे है। चतुर्थ बीजिंग महिला सम्मेलन में निर्णय–निर्माण प्रकिया में महिला नेतृत्व को 30 प्रतिशत तक बढाने के लिए प्रभावी कार्यवाही/योजना, जन संवाद और महिला प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण का मार्ग सुझाया गया। भारतीय राजनीतिक पटल पर महिला प्रतिनिधित्व का औसत 7.88 प्रतिशत है, जो विश्व स्तर पर राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व औसत ;22 प्रतिशतद्ध से बहुत कम है।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

*(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)*

*Visit: www.ijirset.com*

**Vol. 8, Issue 1, January 2019**

दुनिया के सबसे बडे लोकतान्त्रिक देश भारत में वर्तमान में आधी आबादी की संसद में सहभागिता मात्र 14.31 प्रतिशत है, जो 15 वीं लोक सभा में 11 प्रतिशत रही। अब तक सम्पन्न 17 आम चुनाव के परिणामों के अनुसार देश चलाने वाली सर्वोच्च पंचायत में महिला सांसदों की संख्या को हम दहाई की दहलीज से आगे नहीं बढा सके हैं। संसद में महिला सहभागिता /प्रतिनिधित्व की द्वष्टि से भारत की गणना दुनिया के श्रेष्ठ 100 देशों में भी नही की जाती है।इंटरनेशनल पार्लियामेंटी यूनियन के आंकडे बताते हैं कि दुनिया में 21.8 प्रतिशत महिला सांसद हैं। इसके अनुसार भारत 111 वें पायदान पर खडा है। अफ्रीका महाद्वीप के अनेक देश महिला प्रतिनिधित्व की द्वष्टि से भारत से श्रेष्ठ स्थिति में है।[6]

वर्तमान लोकसभा में महिला प्रतिनिधित्व भारतीय लोकतान्त्रिक इतिहास में महिला सहभागिता का सर्वोत्तम स्तर है। वर्तमान में भारतीय संसद के लोकप्रिय सदन लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या 78 है। संसद में महिलाओं की संख्या वर्तमान 17 वीं लोकसभा में अब तक सबसे अधिक है लेकिन महिला उम्मीदवारों के चुनाव में सफलता की द्वष्टि से परिणाम उत्साहजनक नहीं हैं। 2019 के लोक सभा आम चुनावों में 724 महिला उम्मीदवारों में से मात्र 10.77 प्रतिशत ;78द्ध महिला उम्मीदवार सफलता प्राप्त कर सकी।[7]2019 की 17वीं लोकसभा में 542 लोकसभा सांसदों में से 78 निर्वाचित महिला सांसदों का अनुपात 14.4 प्रतिशत है। यद्यपि यह वैश्विक औसत 24 प्रतिशत से कम है फिर भी यह लोकसभा के इतिहास में अब तक का सर्वाधिक आंकड़ा है। 2014 में यह 11.4 प्रतिशत (543 में 62) तथा 2009 में 10.5 प्रतिशत (543 में से 57) था।[8]

संसद में महिला प्रतिनिधित्व के निम्न प्रर्दशन की यह स्थिति तब है, जब देश के प्रमुख सर्वोच्च राजनीतिक पदों पर महिलाएं कुशल नेतृत्व प्रदान कर चुकी है। देश के प्रमुख सर्वोच्च संवैधानिक पद राष्ट्रपति पर श्रीमति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, प्रधानमंत्री पद पर श्रीमति इंदिरा गांधी, लोकसभा अध्यक्ष पद पर श्रीमति मीरा कुमार और श्रीमति सुमित्रा महाजन तथा विभिन्न राज्यों के राज्यपाल के रुप में कुशल नेतृत्व प्रदान कर चुकी है और वर्तमान में भी अपना कुशल नेतृत्व प्रदान कर रही हैं।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 1, January 2019

लोक सभा चुनावों में महिला सहभागिता

| क. स. | वर्ष | कुल सीट | कुल उम्मीदवार | महिला उम्मीदवार | विजयी महिलाओं की संख्या |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 1952 | 499 | 1874 | 51 | 24 |
| 2 | 1957 | 500 | 1519 | 41 | 24 |
| 3 | 1962 | 494 | 1985 | 65 | 37 |
| 4 | 1967 | 515 | 2369 | 66 | 33 |
| 5 | 1971 | 518 | 2784 | 86 | 28 |
| 6 | 1977 | 542 | 2439 | 71 | 21 |
| 7 | 1980 | 542 | 4629 | 142 | 32 |
| 8 | 1984 | 508 | 4241 | 157 | 45 |
| 9 | 1989 | 529 | 6160 | 198 | 28 |
| 10 | 1991 | 521 | 8699 | 325 | 42 |
| 11 | 1996 | 545 | — | 599 | 41 |
| 12 | 1998 | 543 | — | 274 | 44 |
| 13 | 1999 | 537 | — | 295 | 52 |
| 14 | 2004 | 543 | 5435 | 350 | 52 |

Copyright to IJIRSET
DOI:10.15680/IJIRSET.2019.0801081

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 1, January 2019

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 15 | 2009 | 543 | 8070 | 556 | 64 |
| 16 | 2014 | | — | 543 | 68 |
| 17 | 2019 | 545 | 8049 | 724 | 78 |

राजनीतिक सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण आयाम चुनावी प्रकिया में सहभागिता होता है। भारत की केन्द्रीय विधायिका अर्थात संसद के लोकप्रिय सदन में महिला सहभागिता की स्थिति उपेक्षित रही है। लोकसभा आम चुनाव–1952 में कुल 1874 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 51 रही।इन 51 महिला प्रत्याशियों में से 24 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–1957 में कुल 1519 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 41 रही।इन 41 महिला प्रत्याशियों में से 24 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–1962 में कुल 1985 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 65 रही।इन 65 महिला प्रत्याशियों में से 37 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–1967 में कुल 2369 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 66 रही।इन 66 महिला प्रत्याशियों में से 33 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–1971 में कुल 2784 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 86 रही।इन 86 महिला प्रत्याशियों में से 28 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–1977 में कुल 2439 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 71 रही।इन 71 महिला प्रत्याशियों में से 21 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–1980 में कुल 4629 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 142 रही।इन 142 महिला प्रत्याशियों में से 32 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–1984 में कुल 4241 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 157 रही।इन 157 महिला प्रत्याशियों में से 45 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–1989 में कुल 6160 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 198 रही।इन 198 महिला प्रत्याशियों में से 28 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–1991 में कुल 8699 प्रत्याशियों में महिला

Copyright to IJIRSET 

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

*(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)*

*Visit: www.ijirset.com*

**Vol. 8, Issue 1, January 2019**

प्रत्याशियों की संख्या 325 रही।इन 325 महिला प्रत्याशियों में से 42 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही।

लोकसभा आम चुनाव–1996 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 599 रही।इन 599 महिला प्रत्याशियों में से 41 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–1998 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 274 रही।इन 274 महिला प्रत्याशियों में से 44 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–1999 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 295 रही।इन 295 महिला प्रत्याशियों में से 52 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–2004 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 350 रही।इन 350 महिला प्रत्याशियों में से 52 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–2009 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 556 रही।इन 556 महिला प्रत्याशियों में से 64 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–2014 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 543 रही।इन 543 महिला प्रत्याशियों में से 68 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव–2019 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 724 रही।इन 724 महिला प्रत्याशियों में से 78 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही।[9]लोकसभा चुनावों में महिला उम्मीदवारों की संख्या की द्रष्टि से सर्वाधिक सहभागिता वर्तमान लोकसभा (17वीं लोकसभा ) में 724 रही हैं।

प्रथम लोकसभा से वर्तमान लोकसभा तक में महिला सदस्यों का उच्चतम स्तर 14.55 प्रतिशत वर्तमान लोकसभा (17वीं लोकसभा ) में है। भारत की केन्द्रीय विधायिका के लोकप्रिय सदन में महिला सहभागिता की स्थिति उपेक्षित रही है। प्रथम लोकसभा (1952–1957) के कुल सदस्यों 499 में महिला सदस्यों की संख्या 24 (4.80 प्रतिशत) रही। द्वितिय लोकसभा (1957–1962) के कुल सदस्यों 500 में महिला सदस्यों की संख्या 24 (4.80 प्रतिशत) रही। तृतीय लोकसभा (1962–1967) के कुल सदस्यों 503 में महिला सदस्यों की संख्या 37 (7.35 प्रतिशत) रही। चतुर्थ लोकसभा (1967–1971) के कुल सदस्यों 523 में महिला सदस्यों की संख्या 33 (6.30 प्रतिशत) रही। पंचम लोकसभा (1971–1977) के कुल सदस्यों 521 में महिला सदस्यों की संख्या 28 (5.37 प्रतिशत) रही। षष्टम लोकसभा (1977–1980) के कुल सदस्यों 544 में महिला सदस्यों की संख्या 21 (3.49 प्रतिशत) रही। सप्तम लोकसभा (1980–1984) के कुल सदस्यों 544 में महिला सदस्यों की संख्या 32 (5.88 प्रतिशत) रही। अष्ठम लोकसभा (1984–1989) के कुल सदस्यों 544 में महिला सदस्यों की संख्या 45 (8.27 प्रतिशत) रही। नवम लोकसभा (1989–1991) के कुल सदस्यों 517 में महिला

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

*(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)*

*Visit: www.ijirset.com*

**Vol. 8, Issue 1, January 2019**

सदस्यों की संख्या 28 (3.49 प्रतिशत) रही। दशम लोकसभा (1991–1996) के कुल सदस्यों 544 में महिला सदस्यों की संख्या 42 (7.72 प्रतिशत) रही। 11वीं लोकसभा (1996–1998) के कुल सदस्यों 543 में महिला सदस्यों की संख्या 41 (7.55 प्रतिशत) रही। 12वीं लोकसभा (1998–1999) के कुल सदस्यों 543 में महिला सदस्यों की संख्या 44 (8.10 प्रतिशत) रही। 13वीं लोकसभा (1999–2004) के कुल सदस्यों 543 में महिला सदस्यों की संख्या 52 (9.57 प्रतिशत) रही। 14वीं लोकसभा (2004–2009) के कुल सदस्यों 543 में महिला सदस्यों की संख्या 52 (9.57 प्रतिशत) रही। 15वीं लोकसभा (2009–2014) के कुल सदस्यों 545 में महिला सदस्यों की संख्या 64 (11.74 प्रतिशत) रही। 16वीं लोकसभा (2014–2019) के कुल सदस्यों 545 में महिला सदस्यों की संख्या 68 (12.47 प्रतिशत) रही। 17वीं लोकसभा (2019–2024) के कुल सदस्यों 545 में महिला सदस्यों की संख्या 78 (14.31 प्रतिशत) हैं।[10]

इस प्रकार विकास की दृष्टि से भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के विभिन्न स्तरों पर महिलाओं की सहभागिता की स्थिति अपेक्षित नही है। वर्ष 2019 में घोषित जेण्डर डवलपमेन्ट इन्डेक्स 2018 के अनुसार 166 देशों की सूची में भारत को 153 वां स्थान प्राप्त है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में उल्लेखनीय स्थान रखने वाले भारत देश के लिए यह स्थिति शोभनीय नही है। यद्यपि पूर्व वर्षों की अपेक्षा वर्तमान में भारतीय समाज–राजनीति में सुधार द्रष्टिगत होता है। पंचायती राज सम्बंधी 73वें संविधान संशोधन ने महिला नेतृत्व के विस्तार एवं संवर्धन में सराहनीय भूमिका का निर्वहन किया है।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

*(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)*

*Visit: www.ijirset.com*

**Vol. 8, Issue 1, January 2019**

## सन्दर्भ सूची

1. रश्मि गौतम, अश्वेत और दलित परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में भारतीय नारीवादी आन्दोलन की प्रकृति, मध्यप्रदेश सामाजिक विज्ञान अनुसंधान जर्नल, वर्ष 18, अंक 1–2, 2020, पृ.79
2. आशा कौशिक, नारी सशक्तीकरण विमर्श एवं यर्थाथ, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 2004, पृ. 4
3. रश्मि गौतम,4. नोट–1, पृ.79
4. शैलेन्द्र मौर्य, राजनीतिक व्यवस्था में महिला सहभागिता, शोध संकल्प समीक्षा, वॉ. 1, अंक 1, अक्टूबर 2021, पृ. 37
5. शैलेन्द्र मौर्य, नोट–4
6. दंपकनदपंण्बवउध्ेचमबपंसेजवतल्ूवउमदे.तमचतमेमदजंजपवद.पद.चंतसपंउमदज
7. दंअईींतंजजपउमेण्पदकपंजपउमेण्बवउध्मसमबजपवदेध्सवों.ईीं. मसमबजपवदेध्दमेूध्तमबवतक.78ूवउमद.उच.पद.दमू.सवोंध्ंतजपबसमे
8. रूपा मंगलानी, भारतीय शासन एवं राजनीति, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2020, पृ. 556
9. सवोंईींण्दपबण्पदध्उमउइमतेध्ूवउमदंतण्ेंचगघ्पेदव
10. सवोंईींण्दपबण्पदध्उमउइमतेध्ूवउमदंतण्ेंचगघ्पेदव के आधार पर

Copyright to IJIRSET
DOI:10.15680/IJIRSET.2019.0801081